RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-01
January -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

वर्तमान समय में भारत में प्रवजन एक विकट समस्या (जम्मू कश्मीर एवं उत्तराखंड के विशेष सन्दर्भ में)

तान्या पुरी

शोध छात्रा, मालवीय शांति अनुसंधान केंद्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 20 January 2019

Keywords
प्रवजन, संशाधन, जम्मू, उत्तराखंड

***Corresponding Author**
Email: amitjha9648[at]gmail.com

ABSTRACT

विश्व के किसी भी प्राचीन सभ्यता को अवलोकित करे तोहमें यह संज्ञान होता है की विश्व की कोई भी ऐसीसभ्यता नहीं है जिसका प्रारम्भ जिनआवश्यकतों एवं संसाधनोंके साथ हुआ था वह उन्हींआवश्यकताओं एवं संसाधनों के साथ सिमित रहा गया हो | वह नित नूतन नवाचार के साथ आगे बढ़ता गया है | मनुष्य प्राणी की यह विशेषता रही है वह हमेशा अपने आस -पास के घटनाओं से प्रभवित होता है | उनसे कुछ सीखने की कोशिश करता है | वह जिस आवश्यकतोंएवंसंसाधनों से युक्त जिंदगी जीता है उससे संतुष्ट नहीं रहता है | वह हमेशा बेहतर विकल्प की तलाश में अग्रसर रहता है |

विश्व के किसी भी सभ्यता को देखे चाहे वोहड़प्पा , मेसोपोटामिया , मिस्त्र आदि सभ्यता को देखे तो इन सभ्यताओं कुछ स्थान मुख्य होते थे | जोबड़े बाजार या अन्य स्थान के रूप ज्यादा महत्वपूर्ण होता था प्रत्येक व्यक्ति सुदूर से आकर इस जगहों के आस -पास बसने लगे | यह जनसंख्या के प्रवास की प्रक्रिया कोई नयी प्रक्रिया नहीं है | बल्कि यह मानवीय सभ्यता के विकास के साथ ही जुड़ा हुआ है|

आदि काल से ही मनुष्य अपने बेहतर जीवन की तलाश में एक गाँव से दूसरे गाँव ,एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त ,एक देश से दूसरे देश जाता रहा है | मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताऐउसे प्रवास कीओर आकर्षित करती रही है | ,परन्तु प्रवास की इच्छा प्रत्येक मनुष्य के अंदर भिन्न - भिन्न कारणों से उत्पन्न होती है | भिन्न -भिन्न समयों में प्रवास करते समय स्थान और रुचियाँ बदलती रही है | आदिकाल से ही प्रवास मनुष्य के स्वभाव का हिस्सा रहा है | प्राचीन हिन्दू समाज में तो समुन्द्र को पार करना मनाथा परन्तुसमय के साथ मनुष्य उस धारणा की अवहेलना कर विदेशों की ओर आकर्षित हुये |

प्रवजन का अर्थ -

प्रवासियों के लिये अंग्रेजी में इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द "डायस्पोरा " शब्द है | जो मूलतः ग्रीक शब्द है | डायस्पोरा शब्द का विच्छेदकरने पर दो शब्द बनते है | डाया (क्षेत्र में) और स्पिसरो(बोना) अर्थात इस शब्द का प्रतीकात्मकप्रयोगबीजों के प्रसार से सम्बंधित है | डायस्पोराशब्दका सबसे पहला प्रयोगओल्डटेस्टामेंटमें यहूदीलोगों के सन्दर्भ में मिलता है | सामाजिक , राजनीतिक , सांस्कृतिक तथा अन्य कई कारणों से यहूदियों को अपने मूल स्थान को छोड़कर दूर - दूरके देशों में जाकर बसना पड़ा था | दूर -दूर तक फैले हुये यहूदियों के अपनी सभ्यता - संस्कृति के जड़ों से जुड़ाव का द्योतक है |

प्रवासी शब्द पर कुछ लिखने से पहले हिंदी एवं अंग्रेजी शब्दकोशइससे सम्बंधित भिन्न - भिन्न शब्द का प्रयोग होताहै उसको जान लेना आवश्यक है -

Emigrant- A person who leaves their country to livein another: emigrant families / labour / workers.
Emigrate- to leave your own country to go and live permanently in another country.
Emigration- the mass emigration of Jews from Eastern Europe.
Emigre- A person who has left their own country usually for political reasons.
Immigrant- A person who has come to live permanently in a country that is not their own.
Immgrate- To come and live permanentley in a country after leaving your own country.
Immigration- The process of coming to live permanently in a country that is not your own.
Migrant- (i) Aperson who moves from one place to another, especially in order to find work: they

RRIJM 2015, All Rights Reserved

claimed they were political refugees and not economic migrant.
(ii) A bird or animal that moves from one place to another according to the season.
Migration- The movement of large numbers of people, birds or animals from one place to another.
Diaspora-
(i) The movement of the Jewish people away from their own countries to live and work in their country.
(ii) The movement of people from any nation or group away from their own country.
वासी (Native) - Connected with the place where you were born and lived for the first Year of your life.

वासी वे है जो पीढ़ियों से सम्बंधित (जन्भूमि) धरती पर वास कर रहे हो | इनकी जन्म भूमि ही इनकानिवास स्थान हैं|

अप्रवासी (Immigrant) - A person who has come to live permanently in a country that is not their own.

अप्रवासी व्यक्ति उस देश में रह रहा होता हैं जो उसका अपना नहीं हैं | यह स्थान उसके जन्मभूमि से दूर होता हैं |

प्रवासी (Emigrant) – "A person who leaves his country to live in another.
प्रवासी (Migrants)- A person or animal who migrates, Migrant worker, those who travelto another region or country to work.

प्रवासी शब्द के शाब्दिक उत्पत्ति पर ध्यान आकर्षित करे तो 'वस' धातु से 'प ' उपसर्ग लगाने से बनता हैं| 'वस ' धातुका प्रयोग रहने के अर्थ में किया जाता हैं | प्र उपसर्ग लग जाने पर इसका अर्थ बदल जाता हैं | प्रवास का अर्थ हैं विदेश गमन, विदेश यात्रा, घर पर ना रहना हैं | किसी दूसरे देश में रहने वाला व्यक्ति प्रवासी हैं |

प्रवजन का परिभाषा-प्रवास को परिभाषित करने का काम विभिन्न विद्वानों ने किया है जो निम्न है –

डेविड.एम. हीर के अनुसार - सामान्यतकिसी एक भौगोलिक क्षेत्र से दूसरे भौगोलिक क्षेत्र में सापेक्षता स्थायी गमन की प्रक्रिया प्रवजन के नाम से जानी जाती है | दूसरे शब्दों में मनुष्य के निवास स्थान में परिवर्तन की घटना को ही प्रवजन कहा जाता है |

संयुक्त राष्ट्र संघ के जनांकिकी शब्दकोष के अनुसार - देशांतरण निवास स्थान को परिवर्तित करते हुये एक भौगोलिक ईकाई से दूसरे भौगोलिक ईकाई में विचरण का एक प्रकार है |

एजेन्स्टेड के अनुसार प्रवास को किसी व्यक्ति या समूह का एक सामाजिक परिवेश को छोड़कर दूसरे सामाजिक परिवेशमें प्रवेश करना होता है |

न्यूवेबस्टर डिक्शनरीमें लिखा है एक देश,क्षेत्र या स्थान को छोड़कर कार्य की तलाश में जाना प्रवजनहै|

इस प्रकार उपरोक्त परिभाष से स्पष्ट है कि जनसंख्या प्रवजन से आशय किसी एक भौगोलिक सीमा में रोजगार,व्यवसाय या अपनी किसी अन्य मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति या किसी अन्य कारण से किसी दूसरे भौगोलिक सीमा में गमन करने से है | इसके अंदर कईसामाजिकएवं मनोवैज्ञानिक पहलुओं का भी समावेश होता है |

प्रवसन भारतीय समाज में हमेशा से होता आ रहा है कभी प्रवसन स्वेच्छा से होता है तो कभी बेहतर जीवन की तलाश में मज़बूरी बस अपनेजन्मभूमि से अलग स्थान पर जाना होता है प्रवसन को हमेशा उसके आर्थिक पक्ष से देखने का प्रयास किया गया है| परन्तुउसके आर्थिक पक्ष के अलावा भी एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष है जो जो की उसक सामाजिक पक्ष है इस पर भी विचार करना आवश्यक है क्योकि प्रवजन पर विचार करते समय उसके सामाजिक पहलू पर व्यापक जानकारीउपलब्ध नहीं होता है |

प्रवजन एवं महिला -

भारत में प्रवजन के सामजिक पहलुओं का अध्ययन करते है तो हम सर्वप्रथम यह देखते है की भारत में प्रवजन का शिकार महिला होती है वह भी व्यापक पैमाने पर | इस प्रवसन का मूल कही न कही विवाह नामक संस्था में निहित है | भारतीय समाज में विवाह एक महत्वपूर्ण संस्था है | जिसके नियमों का पालन समाज के अधिकांश व्यक्ति करते है | विवाह भारत की एक ऐसी महत्वपूर्ण संस्था है जिसका वर्णन भारत के प्राचीन वांग्मय में किया गया है | मनुष्य इसे अपने अविकसित अवस्था के ही अपने साथ लेकर आया था |

विवाह समूह विवाह,बहुपति विवाह,बहुपत्नी विवाह के स्वरूपों से विकसितहोते हुए अपने सच्चे एवं सर्वाधिक स्वीकार्य एक विवाही स्वरूपमें आया है | विवाह के स्वरूपों के उद्धभव

विकास पर वेस्टरमार्क, हेनरी मेन, जेम्स फ्रेजर,ब्रिफाल्ट जैसे अन्य समाजशास्त्रीय एवं प्राणिशास्त्रीयके काम किया है |

भारतीय प्राचीन वांग्मय बहुत हद तक भारतीय जन सामान्य के जीवन संचालन में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है | भारतीय वांग्मय में वर्णित मनुष्य जीवन के अंतिम लक्ष्य मोक्ष को विवाह से जोड़ दिया गया है| वर्णाश्रम व्यवस्था के अंतर्गत मनुष्य जीवन को १०० वर्ष मानकर उसे चार खण्डों में विभाजित किया गया है | इसी वर्ण व्यवस्था के अंतर्गत वर्णित गृहस्थ आश्रम को एक महवत्पूर्ण आश्रम माना गया है | जिसमे प्रवेश करने के लिए विवाह महत्वपूर्ण है | यह आश्रम अन्य सभी आश्रम के लिए एक आधार का काम करती है |इसी आश्रम में मनुष्य मोक्ष के लिएआवश्यक पञ्च ऋणों की पूर्ति के लिए पञ्च महायज्ञों को करता है | इसीलिये विवाह संस्था को सम्पूर्ण भारतीय समाज के लिये आवश्यक है | जिसमे एक मान्य परम्परा के अंतर्गत अधिकांशलड़कियां अपने पति घर में जाकर ही रहती है |

जिसमें व्यापक पैमाने पर लड़कियों का प्रवजन होता है | कभी - कभी यह भी दिखायी देता है कि जब किसीक्षेत्र विशेष लड़कियों कि कमी होती है तो विवाह के लिये किसी अन्य स्थान से लड़कियों का चयन किया जाता है | जिससे एक क्षेत्र विशेष से भी व्यापक पैमाने पर महिलाओं का प्रवजन उस क्षेत्र में होता है जहाँ कन्या भ्रूण हत्या कि दर ज्यादा होती है या किसी अन्य कारण से वहाँ लड़कियों कि संख्या कम होती है जैसे - राजस्थान , पंजाब , हरियाणा आदि | उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि विवाह से भी स्त्री का प्रवजन व्यापक पैमाने पर होता है |

कश्मीरी पंडित का पलायन -

भारतीय समाज में जब भी प्रवजन कि बात होती है तो एक विशेष तबके कि बात जरूर मानस पटल पर उभरने लगती है वह है घाटी से कश्मीरी पंडित का पलायन | जिसे बीते १९ जनवरी २०१९ को २९ साल हो गया जिसके बाद भी आज तक उनके पुर्नवास कि कोई समुचित व्यवस्था न हो सकी है | कश्मीरी पंडितों के बड़े - बड़ेहवेली आज भी खाली है और वो मज़बूरी बस टेंट में अपनी जिंदगी बसर कर रहे है|

१९ जनवरी १९९० कि भयावह घटना से कुछ समय पहले पंडित और राजनीतिक कार्यकर्ता टीका टपलू कि १९ सितम्बर ,१९८९ को उनके घर के बाहर हथियारबंद लोगों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी | यह पहली हत्या थी जो बाद में १९९० में पलायन का कारण बना | कश्मीरी पंडितों को जबरदस्ती घाटी छोड़ने पर मजबूर किया गया | उन्हें मुस्लिम बनने कि धमकी दी जाने लगी | कश्मीरी स्त्रियों के साथ जबरदस्ती बलात्कार भी किया गया | कश्मीरी पंडित परिवारों के साथ भीषण नर -संहार किया गया | १९९० के बाद से कश्मीरी पंडितों के परिवार का पलायन लगातार जारी रहा है |

१९९० के बाद भी लगातर कुछ ऐसी घटनाये घटती रही जो उन्हें घाटी छोड़ने पर मजबूर करते रहे | जिसमें से कुछ घटनाये निम्न है |

संग्रामपुर नरसंहार -२१ मार्च १९९७ को दहशतगर्त ने कश्मीरी पंडितों के परिवार के घर में घुसकर ७ कश्मीरी पंडितों का अपहरण कर मार डाला गया |

वन्धामा नरसंहार - २५ जनवरी १९९८ को हथियारबंद आतंकियों ने ४ कश्मीरी परिवार के २३ लोगों को गोलियों से भूनकर मार डाला |

प्रानकोट नरसंहार - १७ अप्रैल १९९८ को उधमपुर जिले के प्रानकोट गांव में एक कश्मीरी हिन्दू परिवार के २७ लोगों को मौत के घाट उतार दिया था | इसमें ११ बच्चे भी शामिल थे | इस नरसंहार के बाद पैनी और रियासी के १००० हिन्दुओं ने पलायन किया था |

इस प्रकार १९९० के बाद से लगातार कश्मीरी पंडितों पर अत्याचार जारी है जो उसे न चाहते हुए भी अपनी मातृभूमि को छोड़ने पर मजबूर किया गया | कश्मीरी पंडितों कि अपनी एक संस्कृति थी जो उस घाटी विशेष क्षेत्र से सम्बंधित था |परन्तु घाटी से पलायन के बाद वह संस्कृति धीरे -धीरे समाप्त हो रही है | मुश्किल से ही कुछ कश्मीरी परिवार प्रवजन के बाद उसे संजोये हुए है | कश्मीरी पंडितोंका परिवार घाटी से प्रवजन के बाद अपने आप को कटा हुआ महसूस करते है | उन्हें आज भी हुक्ममरानों से एक उम्मीद बनी हुयी है कि वो उनके समुचित पुनर्वास किव्यवस्था करेंगे |

प्रवजन का पाश और उत्तराखंड -

२०००में उत्तर प्रदेश से अलग होकर एक नए राज्य का निर्माण हुआ जो उत्तराखंड था | नये राज्य के निर्माण के बाद उत्तराखंड के लोगों के मन में एक उम्मीदकी किरण चमक उठी थी की उत्तर प्रदेश से अलग होने के बाद उसका एक स्वंत्रत अस्तित्व रहेगा जिससे उत्तराखंड में एक विकास कि लहर दौड़

RRIJM 2015, All Rights Reserved

उठेगी | परन्तु उल्टा हुआ , अलग राज्य बनने के बाद राज्य के कुछ विशेष जिले जैसे हरिद्वार , देहरादून का विकास हुआ जो पहले से ही काफी हद तक विकसित था | अन्य जिले विशेषकर सुदूर पहाड़ी के क्षेत्र अपेक्षा के शिकार हुए है |उत्तराखंड में एक प्रकार का असंतुलित विकास हुआ है जो किसी क्षेत्र विशेष में सिमटकर रह गया है | इस असंतुलित विकास के गर्भ से ही प्रवजन का जनन हुआ है | जो धीरे -धीरेसम्पूर्ण उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्र में फ़ैल रहा है | रुद्रप्रयाग , टिहरी , पौड़ी ,अल्मोड़ा ,पिथौरागढ़ मुख्य रूप से इस प्रवजन के दंश को झेल रहा है |

इन गाँवों में प्रवजन हो रही अधिकांश जनसंख्या २०-३९ आयु वर्ग के है | जब से उत्तराखंड में प्राकृतिक आपदा के आने की प्रवृत्ती बार -बार बढ़ी है | तब से इन पहाड़ी क्षेत्र में प्रवजन और भी तेज हो गया है| इन क्षेत्रों में प्रवजन के मूल कारणों में से एक कृषी का अलाभकर होना भी है | इस इलाके में कृषी क्षेत्र में संलग्न कृषक को अनेक समस्याओं का सामना करना पर रहा है | इन समस्याओं में से एक समस्या इन क्षेत्र में जंगली जानवरों जैसे - भालू , बन्दर , लंगूर , जनगली सूअर का होना है | जो इन इलाकों में फसलों को भारी नुकसान पहुँचा रहे है | इन इलाकों से युवा के पलायन के बाद कृषिकी अधिकांश जिम्मेदारी घर के वृद्धों या महिलाओं पर है | वृद्धों के लिए या महिलओं के लिये यह संभव नहीं है कीवह दिनमें हाड़ - तोड़ परिश्रम के बाद रात मेंजंगली जानवरों से इनकी रक्षा करे |

दूसरी इनकी एक और समस्या हैवह है कृषी जोतों का विभाजन होना | जनसंख्या के वृद्धि होने से इनके पैतृक संम्पत्ति का लगातार विभाजन हो रहा है | जिससे इनके जोतो का बिखराव छोटे -छोटे भूखंडों में हो रहा है | भूखंडों के बिखराव से उन्हें कृषि में अतरिक्त लागत का वहन करना पर रहा है | जिससे उनकी कृषि अलाभकर होती जा रही है | स्थानीय निवासियों द्वाराकईबार इन समस्या के समाधान के लिये सरकार को चकबंदी करने के लिये कहा गया | परन्तु सरकार की चकबंदी की तमाम योजनायें बस फाइलों में दबी रह गयी | हकीकत में उनका क्रियान्वयनसमुचित रूप से नहीं किया गया |

विगत कुछ वर्षों में देखे तो जलवायु में परिवर्तन के कारण समय से बारिश नहीं हो रहा है जो कृषक के लिये एक चिंता का विषय है | इन पहाड़ी क्षेत्रों में असमय बारिश ने भी कृषी को प्रभावित किया है | बारिश ना होने से इन क्षेत्रों में सिचाई करना बहुत ही मुश्किल हो जाता है | कृषी कार्य से अलगाव के कारण पुरे उत्तराखंड में १ लाख हेक्टेयर से अधिक भूमि बंजर हो चुकी है |

युवाओं के प्रवजन के बाद गांव में बस महिलायें,बच्चेएवं वृद्ध बच जाते है ,घर की देख - भाल एवं कृषि के कार्य को भी महिला को करना होता है | जिससे महिला के ऊपर कामों का एक अतिरिक्त दबाब पर जाता है | ये वे महिलायें होती है जिनका सम्पूर्ण परिवार प्रवजन नहीं करता है बल्कि परिवार का युवामैदानी क्षेत्र में रोजगार की तलाश में गया होता है |

इन पहाड़ी क्षेत्रों में होने वाला प्रवजन कोई मौसमी प्रवजन नहीं है बल्कि इनका प्रवजन एक लम्बी अवधि के लिएहोता है | युवा एक रोजगार तलाश कर लेने के बाद कभी कभी तो अपने पुरे परिवार के साथ रोजगार वाले क्षेत्र में

प्रवजन कर जाता है | इसी कारण से उत्तराखंड के कई गांव में एक परिवार बचा है तो कई गांव पूरी तरह से खाली हो चूका है | जिसे भुतहा गांव घोषित कर दिया गयाहै |

उत्तराखंड से प्रवजन होना सामरिक एवं सुरक्षा के दृष्टि से भी खतरनाक साबित हो सकता है | उत्तराखंड की ३५० किमी की सीमा चीन से और २७५ नेपाल से मिलती है | इन सरहदी इलाकों के गांव धीरे -धीरे खाली हो रहे है | अकेले जोशी मठ ब्लॉक में ३० -४० गांव जैसे मलारी. बम्पा, गमशाली प्रवजन के शिकार हो रहे है | इन गांवों से लगातार जनसंख्या का प्रवजन हो रहा है | यह सरकार के लिये चिंता का विषय है | इन गाँवों के निवासी सीमा पर सुरक्षा की एक कड़ी के रूप में काम करते है| इनके न होने से घुसपैठ होने की आशंका बनी रहती है |इनके ना होने से सीमा पर हो रहे अन्य आतंकवादीगतिविधी की भी जानकारी मिलने में समस्या होती है |

उत्तराखंड में हो रहे प्रवजन से उसके संस्कृति को भी नुकसान हो रहा है | अपने मूल स्थान से प्रवजन केकारण उनके जो पर्व -त्योहार थे | उस पर भी प्रभाव पर रहा है , यह जहाँ प्रवजन कर चले जाते थे वे वहाँ अपने पर्व -त्योहार की एक औपचारिकतावस वहन करते है क्योकि वह अपने पर्व -त्योहार को एक विशेष परिस्थिति से जोड़कर देखते है | अधिकांश त्योहारों का सृजन तो फसलों के उत्पादन से सम्बंधित था | प्रवजन के बाद तो पहली पीढ़ी जिस भी स्थान पर रहते है वहाँ पर्व - त्योहारों को मानते थे | परन्तु एक दो पीढ़ी के बाद त्योहारों को मनाने में कमी दिखने लगाती है | जिससे कुछ त्योहार धीरे -धीरे समाप्त होने के कगार पर पहुँच जाता है | कुछ पर्व त्योहार ऐसे भी होते है जिसे लोग आवश्यकता के अनुसार परिवर्तित कर देते है |जिससे उसका मूल स्वरूप प्रभावित होता है | उत्तराखंड की संस्कृति का एक और अहम हिस्सा है वो वहाँ का के घरों की बनावट की जो काष्ठ एवं स्थापत्य कला का एक बेजोड़ उदहारण है | इन क्षेत्रों में जो भवनों का निर्माण किया जाता है | उसके निर्माण में देवदार के लकड़ी का व्यापक प्रयोग होता है | इन लकड़ी के अलावा वहाँ के पत्थरों का भी प्रयोग किया जाता है | उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों में देवदार के वृक्षों की अधिकता के कारण इन इलाकों में घरों के निर्माण में भी छप्परों में भी देवदार के वृक्ष के लकड़ी का प्रयोग किया जाता था | घरों के खम्भों एवं दरवाजों में इन्हीं देवदार के लकड़ी का प्रयोग किया जाता था जो वर्षों तक ख़राब नहीं होता था | जिसके ऊपर सुन्दर -सुन्दर नक्काशियों को किया जाता था , जो उस क्षेत्र विशेष के काष्ठ कला का द्योतक था | परन्तु प्रवजन के कारण धीरे -धीरे गाँव शहर की भागता गया | गाँव के बने घर धीरे -धीरे भग्नावशेष के रूप में परिवर्तित हो रहे | जिससे वर्षों पुरानी काष्ठ एवं स्थापत्य कला के उत्कृष्ट नमूने धीरे -धीरेसमाप्त हो रहे हैऔर प्रवजन के कारण ना तो उन घरों पर ध्यान दिया जा रहा है जिससे वह धरोहर बचा रहे | प्रवजन के कारण ना तो इन क्षेत्रों में नये घरों का निर्माण हो रहा है जिससे यह कला बचा रहे |

उत्तराखंड में हो रहे प्रवजन में ना सिर्फ शहरों पर एक प्रकार का अतिरिक्त बढ़ रहा है बल्कि गाँव खाली होने से एक प्रकार का कृषि संकट की उत्पन हो रहा है | महिलाओं के ऊपर कृषि एवं घर का अतिरिक्त दबाब पड़ रहा | कृषि के काम

RRIJM 2015, All Rights Reserved

छोड़ने से भूमि बंजर होते जा रहे है जो कृषि संकट को जन्म दे रही है | एक विशेष संस्कृति का धीरे - धीरे ह्रास होरहा है |

निष्कर्ष -

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि प्रवजन किसी एक विशेष काल खंड में होने वाली प्रक्रिया नहीं है बल्कि प्रवजन प्रत्येक कालखंड में होता रहा है | यह किसी विशेष समाज कि विशेषता नहीं बल्कि यह प्रत्येक समाज में परिलक्षित होता है | प्रवजन कि दर समय एवं समाज के अनुसार कमोबेश जरूर प्रभावित होता है | भारत में भी प्रवजन कि प्रक्रिया को एक व्यापक स्तर पर हुआ है | कश्मीर एवं उत्तराखंड दो ऐसे पहाड़ी राज्य जहाँ प्रवजन व्यापक पैमाने पर हुआ है | कश्मीर में जहाँ प्रवजन एक विशेष तबका का हुआ वो कश्मीरी पंडित थे | जो एक विशेष संप्रदाय के हिंसा के शिकार हुए है | इनके होनेवाले प्रवजन को सरकार रोकने में विफल रही है | आज भी कश्मीरी पंडित अपने घर - वापसी के इंताजर में है | वही उत्तराखंड में पलायन के कई कारण थे उसमे के कुछ प्रमुख है कृषि का अलाभकर होना और युवा के लिए रोजगार का अभाव होना है | सरकार को इनके रोजगार में इनके कृषि से सम्बंधित अन्य समस्याओं पर सरकार को ध्यान देना चाहिए | अधिकारिओं के द्वारा इसका क्रियान्वयन समुचित रूप से करना चाहिए जिससे सभी को लाभ पहुँच सके और इन क्षेत्रों से प्रवजन रुक सके | जिससे इन क्षेत्रों कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्वरूप विद्यमान रहे |

सन्दर्भ सूची-

1. आप्रवासी, मंजु कपूररैंडम हाउस इंडिया नोएडा, 2009
2. हम प्रवासी, अभिमन्युअनत प्रभात प्रकाशन दिल्ली, 2004
3. Dubey, Ajay. Indian diaspora: Global Identity. New Delhi Kalinga Publication 2003
4. Encyclopedia Britanica Vol.5; William Benton, Pub. Chicago, 1974
5. Ecyclopedia of the Indian Diaspora; Lal Brij v. Edit. New York Oxford University Press, India, 2007
6. Oxford Advanced Learner's Dictionary, Edited by Sally ehmeier, Oxford University Press.
7. Kingsly, Davisthe population of india and Pakistan, Princeton university press, Princeton, new jersey , 1951
8. दैनिक भास्कर, हिंदी समाचार पत्र, ०९ अगस्त २०१६
9. http://thewirehindi.com/16278/kashmiri-pandit-ground-report/
10. https://www.bbc.com/hindi/india/2015/01/150123_kashmiri_pundit_migration_sr
11. https://hindi.timesnownews.com/india/article/black-day-for-kashmiri-pandit-19-january-1990-jammu-kashmir-anupam-kher-ashok-pandit/350346

RRIJM 2015, All Rights Reserved